Toppersnotes

Unleash the topper in you

SET

State Eligibility Test

राज्य पात्रता परीक्षा

भाग – 1

शिक्षण और शोध अभिवृत्ति, पठित गद्यांश एवं संचार

SIERRA INNOVATIONS

SET

क्र.स.	अध्याय	पृष्ट संख्या
	Unit – 1 शिक्षण अभिवृत्ति	
1.	शिक्षण : प्रकृति, उद्देश्य, विशेषताएँ	1
2.	शिक्षण अभिक्षमता	2
3.	शिक्षण की प्रकृति और विशेषताएँ	3
4.	शिक्षण के उद्देश्य	7
5.	शिक्षण के महत्वपूर्ण कारक – शिक्षण सूत्र	9
6.	शिक्षण के सिद्धांत	10
7.	अधिगम	12
8.	शिक्षण को प्रभावित करने वाले कारक	14
9.	शिक्षण विधियाँ	16
10.	संगोष्ठी	18
11.	शिक्षण सहायक सामग्री	22
12.	मूल्यांकन का अर्थ	25
13.	अभ्यास प्रश्न	36
	Unit – 2 शोध अभिवृत्ति	
1.	अनुसंधान की परिभाषा	45
2.	अनुसंधान की विशेषताएं	40
3.	अनुसंधान प्रकिया के मुख्य सोपान	47
4.	पेपर प्रस्तुति, आलेख, कार्यशाला, सेमिनार, सम्मेलन और संगोष्ठी	62
5.	अभ्यास प्रश्न	75
	Unit – 3 बोध	
1.	बोध	84
2.	अध्ययन बोध	85
	Unit – 4 सम्प्रेषण	
1.	सम्प्रेषण की अवधारणा	97
2.	प्रभावी सम्प्रेषण	97
3.	सम्प्रेषण प्रणाली	98
4.	कक्षा सम्प्रेषण	102
5.	संप्रेषण में आने वाली प्रमुख बाधाएं	102

6.	प्रभावी कक्षा संप्रेषण के सिद्धांत	103
7.	जन मीडिया और समाज	105
8.	अभ्यास प्रश्न	107

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

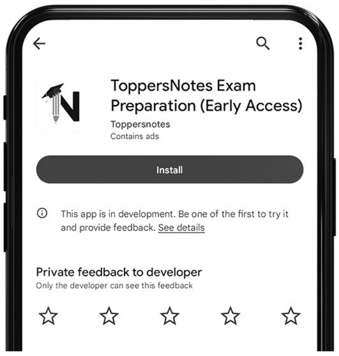

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से।

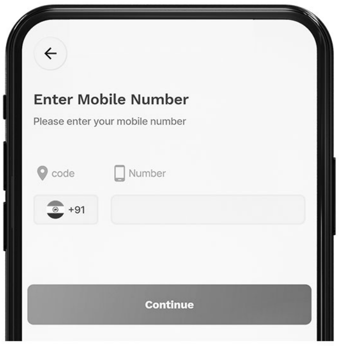

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें।

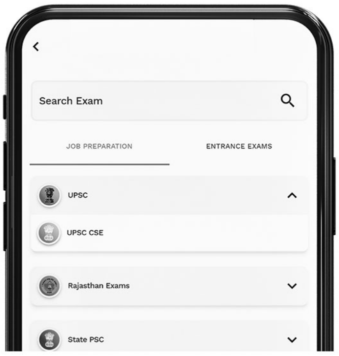

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें।

सर्च बटन पर क्लिक करें।

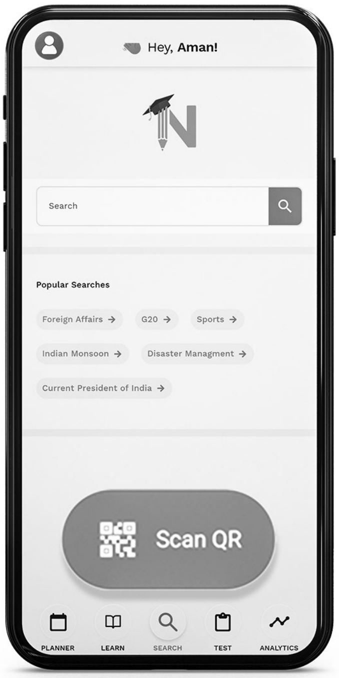

SCAN QR पर क्लिक करें।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें।

- सोल्युशन वीडियो
- डाउट वीडियो
- कॉन्सेप्ट वीडियो

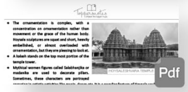

- अतिरिक्त पाठ्य-सामग्री

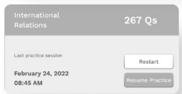

- विषयवार अभ्यास
- कमजोर टॉपिक विश्लेषण

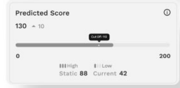

- रैंक प्रेडिक्टर
- टेस्ट प्रैक्टिस

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए **hello@toppersnotes.com** पर मेल करें या **766 56 41 122** पर whatsapp करें।

शिक्षण : प्रकृति, उद्देश्य, विश्षेताएँ Teaching : Nature, Objectives, Characteristics

शिक्षण अंग्रेजी शब्द Teaching से उत्पन्न हुआ है जिसका सामान्य अर्थ है – शिक्षा प्रदान करने की क्रिया। वही शिक्षण शब्द संस्कृत भाषा की **'शिक्ष'** धातु से उत्पन्न हुआ है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है सीख देना या सिखाना।

व्यापक अर्थ में शिक्षा औपचारिक अथवा अनौपचारिक रूप में आजीवन चलने वाली क्रिया है जबकि संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी शिक्षण संस्थान में औपचारिक रूप में शिक्षा ग्रहण करने से है।

शिक्षण की परिभाषाएँ (Definitions of Teaching)

1. शिक्षण एक परिपक्व व क्रम परिपक्व व्यक्ति के बीच की आत्मीय संबंध का प्रारूप है जहाँ कम परिपक्व व्यक्ति को शिक्षण प्रक्रिया की ओर अग्रसर किया जाता है। **(मौरीसन)**
2. शिक्षण एक पारस्परिक प्रभाव है जिसका उद्देश्य व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाना है। **(गेज)**
3. दूसरे को सिखाने व उन्हें निर्देशित करने की प्रक्रिया को शिक्षण कहते है। (रियान्स)

शिक्षण कौशल की विशेषताएँ (Characteristics of teaching skills)

1. शिक्षण कौशल से शिक्षण की प्रक्रिया सरल व सहज हो जाती है।
2. शिक्षण कौशल शिक्षक के वह व्यवहार है ज बवह कक्षा शिक्षण संबंध कार्य करती है।
3. शिक्षण कौशल से शिक्षण के पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता मिलती है।
4. शिक्षण कौशल के माध्यम से शिक्षकव विद्यार्थी के मध्य प्रभावशाली अंतक्रिया विकसित की जाती है।

अध्येता की विशेषताएँ (Characteristics of learners)

1. अध्येता की शारिरीक और मानसिक रूप से उत्तसम स्वास्थ्य।
2. अध्येता की मूलभूत क्षमता जो उसे सीखने की दिशा में आगे बढाना है।
3. महत्वाकांक्षा और उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर।

शिक्षण अभिवृति

शिक्षण अभिक्षमता (Teaching Ability)

एक राष्ट्र की प्रगति और समृद्धि मानव संसाधनो के विकास पर निर्भर करती है । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सक्षम शिक्षकों की सदैव आवश्यकता रहती है । राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा उन अभ्यर्थियों के मूल्यांकन के लिए है, जो अपने ज्ञान और कौशल के आधार पर उच्च शिक्षण संस्थानों के अध्यापनो वृत्ति या अनुसंधान मे प्रवेश पाना चाहते है।

किसी उच्च शिक्षण संस्थान में सफल शिक्षक बनने की योग्यता, बुद्धिमता, मनोदृश्टि आदि वांछित गुण होने चाहिए।

शिक्षा और शिक्षण (Education & Teaching)

शिक्षण का मूल अर्थ है शिक्षा प्रदान करना । इस शब्द की उत्पत्ति ''शिक्ष'' से हुई है, जिसका अर्थ है – ज्ञान प्राप्ति करना । जिसके माध्यम से हम अपने संस्कारों एवं व्यवहारो का निर्माण करते है ।

- **शिक्षा का उद्देष्य षिश्य के ज्ञान एवं व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना है । शिक्षा प्रदान करने वाले को शिक्षक, अध्यापक या अध्येता कहा जाता है ।**
- **शिक्षण मूलतः शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सहजकर्ता के रूप मे कार्य करता है ।**
- **शिक्षा के अर्थ को दो मुख्य परिपेक्षो मे समझा जा सकता है– व्यापक एवं संकुचित**

शिक्षा के व्यापक अर्थ (Teaching Ability)

यह सारा संसार हमारा शिक्षा क्षेत्र है । शिक्षा का उद्देश्य मानव व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास है । सभी व्यक्ति, बाल, युवा, वृद्ध, स्त्री, पुरूष, विद्यार्थी है । अतः व्यक्ति का पूरा जीवन ही शिक्षा काल है । साथ ही प्रत्येक व्यक्ति जहां स्वयं दूसरो से कुछ सीखता है

शिक्षा के संकुचित अर्थ के अनुसार शिक्षण की परिभाषा (Definition of Teaching)

- **शिक्षण अधिगम – प्रक्रिया की उद्देश्यपूर्ण दिशा है ।**
- **शिक्षण शिक्षकों द्वारा छात्रों को प्रदान किए गए अनुभवो के आधार पर उनमे अपेक्षाकृत स्थाई परिवर्तन कि प्रक्रिया है ।**
- **शिक्षण ज्ञान, अनुभव और वैज्ञानिक सिद्धांतों का दक्षता से समाज के लिए अनुकूल वातावरण तैयार कर सकते है ।**
- **शिक्षण एक योजनाबद्ध गतिविधि है, इसकी प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि , शिक्षार्थी कितनी सुगमता, सरलता और शुद्धता से विषय–वस्तु को ग्रहण करते है ?**
- **शिक्षण पूर्व निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिक्षार्थी, शिक्षक और अन्य चरो को सुव्यवस्थित तरीके से संगठित करने कि प्रक्रिया है ।**

शिक्षण से संबंधित कुछ अवधारणाएँ (Concepts Related to Teaching)

1. शिक्षण के तीन आधार – शैक्षणिक प्रक्रिया को तीन प्रश्नों के आधार पर किया जा सकता है– 'क्यो', 'कैसे' और 'क्या', 'क्यों' का उत्तर सबसे महत्वपूर्ण है ।
2. आदर्शवाद :– आदर्शवाद एक अत्यंत प्राचीनवादी सिद्धांत है, जिसका प्रभाव किसी न किसी रूप में जीवन के प्रत्येक पक्ष पर पड़ता है ।
   अरस्तु के अनुसार, शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्ति को नैतिक एवं बौद्धिक सदगुणो का आधार बनाना है । व्यक्ति को ऐसे श्रेष्ठतम मूल्यों से अलंकृत करना है, जो मानवता के लिए आवश्यक है ।

3. प्रकृतिवाद – इनमें प्रकृति को ही शिक्षक माना गया है । और पुस्तकीय ज्ञान पर कम बल दिया जाता है । बच्चा यदि वृक्ष पर चढ़ना चाहता है । यह एक प्रकार से शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षण है । शिक्षण का कार्य छात्रों के विकास के लिए वातावरण तैयार करना है।
4. प्रयोजनवाद – जॉन डेवी को प्रयोजनवाद का मुख्य प्रतिपादक माना गया है । इसके अंतर्गत 'क्रियाशीलता तथा व्यवहारिकता' को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है । इनको प्रयोगवाद भी कहा गया है। प्रयोगवाद को अमेरिका कि देन माना गया है।
5. अस्तित्ववाद – इसके मुख्य प्रतिपादक कीर्कगार्द है, जिनका यह कहना है।
   'मेरा अस्तित्व है', इसमें व्यक्तिवाद पर अधिक बल दिया गया है।
   अस्तित्व को बनाए रखने या पूर्णता लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को स्वयं सघर्ष करना पड़ता है।
6. योग :– परंपरागत रूप से भारतीय दर्शन के छ रूप माने जाते है । जिनमें से योग एक है । ऋषि पतंजलि को योगशास्त्र का रचयिता माना जाता है । योग, मन की प्रवृत्तियों को नियंत्रित करने की विद्या है।

शिक्षण की प्रकृति और विशेषताएं (Nature & Features of Teaching)

1. शिक्षण मूलतः एक बौद्धिक गतिविधि है ।
2. शिक्षण के दो मुलभूत प्रतिरूप है । – प्रशिक्षक केंद्रित एवं शिक्षार्थी केंद्रित
3. शिक्षण के विभिन्न स्तर है ।
4. शिक्षण पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम के अनुसार होता है ।
5. शिक्षण का वातावरण गतिशील होता है ।
6. शिक्षण, अधिगम, अनुदेश, प्रशिक्षण, इत्यादि का परस्पर घनिष्ठ संबंध है ।
7. शिक्षण एक संव्यवसाय या वृत्ति है । शिक्षण – कौशल प्राप्त करने के लिए एक लंबी अवधि का अध्ययन और प्रशिक्षण आवश्यक है ।
8. शिक्षण विज्ञान के साथ–साथ कला भी है ।

बौद्धिक गतिविधि (Intellectual Activity)

शिक्षण अनिवार्य रूप से एक बौद्धिक गतिविधि है । शिक्षण बौद्धिक विकास की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है । शिक्षक की सभी गतिविधियो– शिक्षण उद्देश्यो की स्थापना, पाठ्यक्रम विकसित करना, शिक्षण प्रतिधि, मुल्यांकन इत्यादि । शिक्षक के लिए यह आवश्यक है । कि वह कक्षा के पर्यावरण को यथा सम्भव प्रेरणात्मक बनाए । शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में छात्र अनिर्मित उत्पादक सामग्री कि तरह होते है । मानसिक विकास कि कई विशेषताएं होती है, अंतर्गत उत्तरोत्तर विकास, नए विचारों का विकास, विचारों की अभिव्यक्ति, संज्ञानात्मक योग्यताओं का विकास, इत्यादि करना होता है ।

प्रशिक्षक केंद्रित दृष्टिकोण (Teacher Centered Approach)

- **यह शिक्षण का परम्परागत दृष्टिकोण है ।**
- **इसमें शिक्षक का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, गति, सामग्री, प्रविधि पर पूर्ण नियंत्रण रहता है । शिक्षार्थी सीखने के लिए पूर्णतया शिक्षक पर आश्रित रहता है ।**
- **इस द्रष्टिकोण को आंग्ल भाषा मे पेडागोजि भी कहा जाता है । जिसका अर्थ है 'शिक्षण का विज्ञान'**

शिष्य–केंद्रित या शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षण (Learner Centered Teaching)

शिक्षार्थी अधिकतर आत्म निर्देशित होता है, और स्वयं उत्तरदायी माना जाता है । शिक्षार्थी का हित केवल ज्ञान प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि उसकी विवेचना में भी निहित है । शिक्षक का कार्य सीखने के लिए मागदर्शन एवं सुगम वातावरण तैयार करना है ।

शिक्षण के विभिन्न स्तर (Levels of Teaching)

शिक्षण का मुख्य उद्देश्य अधिगम होता है । एक शिक्षक विषय वस्तु को निम्न तीन स्तरों के माध्यम से छात्रों तक पहुंचाना चाहता है ।

शिक्षण के विभिन्न स्तर

- स्मृति स्तर
- अवबोध स्तर
- चिन्तन स्तर

स्मृति स्तर (Memory Level)

- **षिक्षण के स्मृति के मुख्य प्रस्तावक हर्बट है।**
- **यह षिक्षण अधिगम प्रक्रिया का प्रारंभिक चरण है ।**
- **यह तथ्यों को कंठस्थ और अभ्यास करने के लिए प्ररित करता है।**
- **षिक्षण अधिगम प्रक्रिया मूलत उददीपन प्रतिक्रिया मानी जाती है।**

अवबोध या ग्रहण षक्ति स्तर (Perception Level)

- **मारिसन ग्रहण स्तर के मुख्य प्रस्तावक है।**
- **तथ्यों को न केवल याद रखना बल्कि उन्हें समझना भी है।**
- **यह षिक्षक और षिश्य दोनों के लिए तथ्यों को आत्मसात करने हेतु सक्रिय भूमिका प्रदान करता है ।**

चिंतन या विमर्शी स्तर (Thinking Level)

1. हंट इस स्तर के मुख्य प्रस्तावक है।
2. यह शिक्षण का उच्च स्तर है स्मृति स्तर एवं गृहण षक्ति स्तर दोनों का आधार है
3. यह शिक्षण का समस्या केन्द्रित दृष्टिकोण है।
4. कला का वातावरण मुक्त और स्वतंत्र होता है
5. यह स्तर विचारशील स्तर की शक्ति को विकसित करता है। ताकि शिक्षार्थी तक एवं कल्पना के द्वारा सफल एवं सुखी जीवन की समस्याओं का समाधान कर सके। इस स्तर पर छात्र समस्याओं के निवारण हेतु अनुसंधान भी कर सकते है।
6. परीक्षा के लिए मुख्यतः निबंध प्रकार के प्रश्न उतरों का उपयोग किया जाता है।
7. निबंध परीक्षा के साथ मनोवृति, विचार एवं भागीदारी को भी मुल्यांकन के लिए प्रयोग किया जा सकता है।
8. शिक्षण पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम के अनुसार होता है। पाठ्यचर्या को व्यापक तौर पर शैक्षिक प्रक्रिया के दौरान वांछित छात्र अनुभव प्रदान करवाने के रूप में परिभाशित किया जाता है । औपचारिक शिक्षा में पाठपचर्या बहुत महत्वपूर्ण है, यह शिक्षण व्यवस्था का आधार है।

पाठ्यक्रम एक पाठ्यचर्या (Curriculum)

पाठ्यचर्या के अंतगर्त एवं शिक्षण सामग्री के माध्य नियोजित परस्पर क्रिया, संसाधन (जैसे कि पुस्तक, मल्टीमिडिया) और मूल्यांकन प्रक्रिया आते है। इसको अध्ययन की परिभाषित और निर्धारित रूपरेखा मान सकते है। कि उसको अपने शिक्षार्थियों को क्या पढ़ाना हैइससे शिक्षण के मानक स्थापित होते है।

शिक्षक ने क्या पढ़ाना है ? यह पाठ्यचर्या या पाठ्यक्रम निर्धारित करती है। लेकिन कैसे पढ़ाना है, उसके लिए अनुदेश होते हे शिक्षक के मन में योजना होनी शिक्षार्थी का शिक्षण या कला अनुदेशन के साथ कैसा अनुभव रहता है।

क्रियात्मक पाठ्यचर्या के अंतर्गत विद्यार्थी जीवन कौशल सीखता है । जो उसको स्वतंत्र रहना सिखाते है । जैसा – संवाद या संचार कौशल रोजगार कौशल या विशेष परिस्थिति (कोई रोग या दिव्यांगता) के लिए कुछ विशिष्ट कौशल सीखना ।

पाठ्यक्रम क्या है । पाठ्यक्रम एक दस्तावेज है जिसको अध्ययन या कक्षा अध्ययन की परिभाषित और निर्धारित रूपरेखा माना जाता है ।

तालिका 1.1 पाठक्रम एवं पाठययचर्या की तुलना

	पाठक्रम Syllabus	पाठयचर्या Curriculum
प्रवृति	वर्णात्मक	निदैशात्मक
किस के लिए	विषय के लिए	कोर्स के लिए
विषय क्षेत्र	संकुचित	विस्तृत
कौन सेट करता है	परीक्षा बोर्ड	सरकार या उच्च संस्थान
अवधि	निश्चित– समान्यता एक वर्ष	कोर्स समाप्ति तक
समरूपता	विभिन्न अध्यापको के लिए विभिन्न	सभी अध्यापक के लिए
	एकसमान	

स्त्रोत – (NCERT – Pedagogy of Science)

गतिशील वातावरण (Dynamic Environment)

शिक्षण एक निरन्तर प्रक्रिया है जिसका मूलतत्व संचार है । जो स्वयं भी गतिषील है । शिक्षण, समय और स्थान के अनुसार बदलता रहता है । शिक्षण को प्रभावित करने वाले राजनैतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं तकनीकी कारण हो सकते है ।

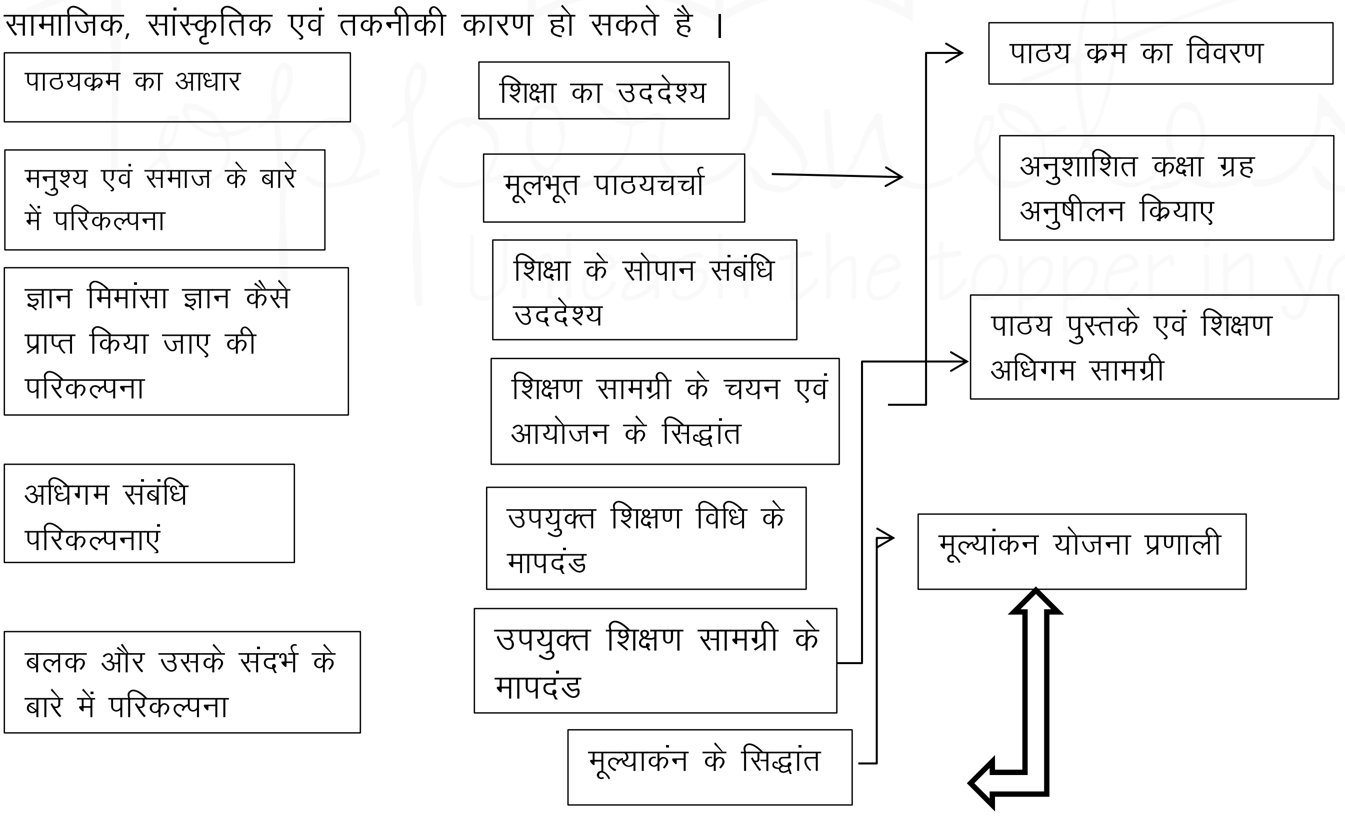

शिक्षण वातावरण मे मुख्य तीन प्रकार के चर माने जाते है । जो एक–दूसरे को प्रभावित करते है और एक दूसरे से प्रभावित होते है ।

स्वतंत्र चर

शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक, स्वतंत्र चर के रूप में कार्य करता है। वह छात्रो को यथासंभव पूर्ण अधिगम अनुभव प्रदान करने के विभिन्न प्रकार के कार्यों और गतिविधियों में व्यस्त रहता है।

आश्रित चर

इसमें छात्र आश्रित चर माने जाते है। वह अपने शिक्षक पर निर्भर करते है। उसको शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा निर्धारित सभी क्रियाएं नियोजन, व्यवस्था और प्रस्तुतीकरण के अनुसार कार्य करता पड़ता है।

हस्क्षेप चर

शिक्षण प्रक्रिया में पाठय वस्तु, शिक्षण विधियां, शिक्षण युक्तियां तथा शिक्षण व्यूह रचनाएं आदि हस्तक्षेप चर के वर्ग में आती है।

यह सभी चर एक दूसरे के पूरक है और सम्मिलित होकर शिक्षण प्रक्रिया को पूर्ण बनाते है जैसे – एक चिकित्सक सबसे पहले रोगी व्यक्ति का निदान या पहचान करके ही उसका उपचार आरम्भ करता है । और बाद में समय– समय पर उसका अवलोकन करता है वैसा ही कार्य एक षिक्षक द्वारा किया जाता है ।

शिक्षण का राजनीतिक वातावरण (Political Environment of Teaching)

शिक्षण प्रक्रिया का वातावरण राजनैतिक व्यवस्था के अनुसार भी होता है ।

निम्नलिखित अनुच्छेदो में इस बात का सक्षित वर्णन किया जाता है ।

1. **एकतंत्र शासन** (Autocracy)
   इस व्यवस्था में शिक्षण प्रक्रिया शिक्षक प्रधान मानी जाती है।
2. **लोकतंत्र** (Democracy)
   इस व्यवस्था में शिक्षा और शिक्षार्थी के संबंध मानवीय आधार पर होते है ।, दोनों एक–दूसरे के विचारों को सम्मान देते है ।
3. **हस्तक्षेप रहित शासन** (Laissez Faire)
   यह अवस्था सबसे लचीली है । इसमें शिक्षक एक मित्र के रूप में कार्य करता है ।

शिक्षण के चरों के विभिन्न कार्य (Functions of Teaching)

1. **निदानात्मक या नैदानिक क्रिया**
   यह कार्य इस मान्यता पर आधारित है, कि हर छात्र अद्वितीय है। इसमें शिक्षक की भूमिका ज्यादा सक्रिय है। वह पाठ्य साम्रगी व छात्र दोनों पर ध्यान देता है । छात्र को क्या आती है तथा क्या नही इसका पता लगता है।
2. **उपचारात्मक क्रिया**
   निवानात्मक दृष्टिकोण से छात्रों की कई कमियां शिक्षक के सामने आती है। उपचारात्मक क्रियाओ मे यह देखा जाता है कि इन कमियो को कैसे दूर किया जाए तथा क्षेत्रों में वांछित परिवर्तन लाने के शिक्षण के उद्देश्य को कैसे पूरा किया जाए। इसमे शिक्षक का अनुभव पूर्वज्ञान एवं छात्र की प्रकृति की महत्वपूर्ण भूमिका है।
3. **मूल्यांकन क्रिया**
   इन क्रियाओ से यह जाना जाता है। कि क्षेत्रों के आचार व्यवहार में वांछित परिवर्तन आया है या नहीं। इसको इस अध्याय के बाद मे मूल्यांकन प्रणाली के अंतर्गत वर्णित किया गया है।

शिक्षण, अनुदेश और अधिगम (Teaching, Instruction, Learning)

इन तीनों का परस्पर निकटतम संबंध है । शिक्षण मूल रूप से एक ऐसा कार्य है, जो कि अधिगम को संभव बनाता है । इसलिए जब तक छात्र शिक्षण उद्देश्यों के अनुरूप कुछ सीखते नहीं है, इनको निरर्थक ही माना जाएगा ।

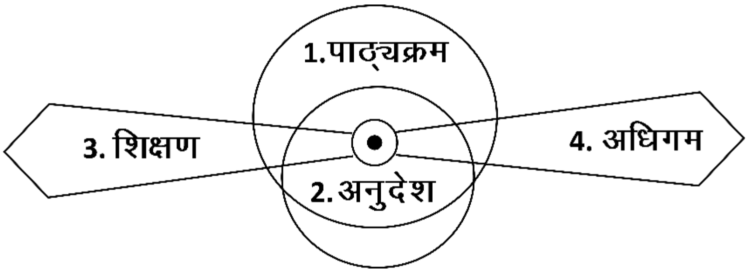

शिक्षण किसी व्यक्ति को शिक्षित करने का मुख्य साधन होता है ।

चित्र 10

शिक्षण (Teaching)	अनुदेश (Instruction)	अधिगम (Learning)
शिक्षण का मूल विचार ज्ञान के एक से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरण हेतु परस्पर संवादात्मक संबंध स्थापित करना है।	अनुदेष मे छात्र एवं षिक्षक के बीच पारस्परिक अंत प्रक्रिया की सम्भावना नहीं होती है।	शिक्षण और अनुदेश के माध्यम से अधिगमन के अनुभव प्रदान होते है। उनके व्यवहारों मे वांछित परिवर्तन लाया जाता है।
शिक्षण में अनुदेश निहित होता है।	अनुदेश शिक्षण का एक महत्वपूर्ण घटक होता है, लेकिन इसमें अधिगम निहित नहीं होता।	अधिगम के लिए शिक्षण एवं अनुदेश सहायक होता है, परंतु आवश्यक नही
शिक्षण से ज्ञानात्मक एवं क्रियात्मक पहलूओं का विकास किया जाता है।	अनुदेश से केवल जानात्मक पहलु का विकास किया जाता है।	अधिगम शिक्षण और अनुदेश के प्रभाव का परिणाम है ।

शिक्षण विज्ञान भी है, और कला भी

विज्ञान की महत्वपूर्ण विशेषताएं है (Important Features of Science)

1. व्यवस्थित ज्ञान का समूह
2. निरीक्षण और परीक्षण पर आधारित सिद्धांत
3. कारण और परिणाम संबंध
4. सार्वभौमिक सिद्धांत
5. भविष्य में होने वाली घटनाओं के परिणामों के पूर्व अनुमान कि सम्भावना

शिक्षण के उद्देश्य (Teaching Objectives)

एक सूचना आधारित समाज मे जिसमें ज्ञान का तेजी से प्रसार हो रहा हो, शिक्षकों के लिए यह महत्वपूर्ण है। कि दीर्घकालिक लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अपने छात्रों को प्रेरित और सज्जित करे। छात्र भी अपने स्तर पर अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए अनवरत प्रयत्न करे।

ब्लूम के द्वारा शिक्षण एवं निर्देशामक उददेश्यो का वर्गीकरण –

ब्लूम 1956 के अनुसार शिक्षण या अनुदेशात्मक उद्देश्यों को तीन भोगियों मे विभाजित किया गया है, जिनको आंग्ल भाषा के 3H भी कहा जाता है –

head (ज्ञानात्मक), heart (भावात्मक) और hand (मनोसंचालित) इनका विस्तृत वर्णन निम्न अनुच्छेदों में किया गया है।

[1] ज्ञानात्मक ज्ञान क्षेत्र [2] भावात्मक ज्ञानक्षेत्र [3] मनोसंचालित ज्ञानक्षेत्र

(Cognitive Domain) (Affective Domain) (Psychomotor Domain)

ज्ञानात्मक ज्ञान क्षेत्र – यह बौद्धिक क्षमता के विकास से संबंधित होता है ।

1. ज्ञान (Knowledge) :– यह मूल रूप से जानकारी या सामग्री को याद रखने से संबंधित है ।
2. बौद्ध (Comprehension):– यह स्तर सामग्री का अर्थ समझने की क्षमता से संबंधित है ।
3. उपयोग (Application) – यह अमूर्त या भावात्मक ज्ञान को मूर्त या व्यवहारिक रूप से लाए जाने से संबंधित है ।
4. विश्लेषण (Analtsis) – प्राप्त सूचना को घटको मे इस प्रकार से विभाजित करना तकि उनके अर्थ को उचित ढंग से समझा जा सके।
5. संश्लेषण (Synthesis) : यह मूलत: घटको को समावेशित करने के बारे में है, ताकि एक समग्र सोच विकसित हो इस स्तर को विश्लेशण स्तर का विलोम भी माना जाता है ।
6. मूल्यांकन (Evaluation) :– यह विशेष प्रयोजनों में प्रयुक्त तरीके और सामग्री के मूल्यांकन के बारे में किया गया निर्णय है ।

भावात्मक ज्ञानक्षेत्र (Affective Domain)

इस ज्ञानक्षेत्र के अन्तर्गत मुख्य रूप से मनोदृष्टि या मनोभाव प्रेरणा, शिक्षण प्रक्रिया में छात्रों की सहभागिता, जो हम सीखते है । उसका महत्व जानना और जीवन में अनुशासन जैसे मूल्यों को समावेशित कैसे किया जाए इत्यादि आते है इसमें निम्नलिखित सम्मिलित है:

1. आग्रहण (Reciving) – सुनने कि इच्छा
2. प्रतिक्रिया (Responding) – सह–भागिता की इच्छा
3. आंकलन (Valuing) – जो हम सीख रहे है । उसका क्या महत्व है ?
4. संयोजित करना (Organizing)
5. निरूपण (Characterisation)

मनोसंचालित ज्ञान क्षेत्र (Psychomotor Domain)

इसको हम मनोगत्यात्मक, मनोप्रेरक या क्रियात्मक ज्ञान क्षेत्र भी कहते है । यह मुख्य रूप से तकनीकी कौशल के अधिग्रहण से संबंधित है । मनो–संचालित ज्ञानक्षेत्र के अंतर्गत अनुदेशात्मक उद्देश्य के निम्न पांच स्तर वर्णित है ।

1. प्रतिरूपता (Imitation) – इसमें किसी कुराल व्यक्ति या शिक्षार्थी के कौशल को यथा रूप में अपनाने का प्रयास किया जाता है।
2. कार्यसाधन या हस्तकौशल (Manipulation) - एक शिक्षार्थी मषीनरी, उपकरण, आदि के साथ प्रयोग करने का प्रयत्न करता है, ताकि आत्मविश्वास बढ़े।
3. परिशुद्धता (Precision) – अक्सर यह कहा जाता है – 'करत करत अभ्यास के, जड़मत होत सुजान'। एक ही कार्य को बार बार करने से उसमें सुधार एवं सुद्धता आती है ।
4. स्पष्ट अभिव्यक्ति - (Articulation)
   यह भी सतत अभ्यास पर निर्भर करता है।
5. प्रकृतिकरण - (Naturalization)
   - इसमे कौशल को आत्म सात किया जाता है और शिक्षार्थी अनुरूप बनाना, संशोधन करना, नई तकनीको का नियत करना आदि गुणों को सीखता है।
   - वर्ष 2001 में एंडरसन और करतवुल ने ब्लुम वर्गीकरण में कुछ संसोधन किया, जिसके अनुसार ज्ञान को सोचने का परिणाम माना गया।
   - उन्होंने समझ के स्थान पर बोद्ध शब्द और संश्लेषण के स्थान सृजनात्मक शब्द के प्रयोग पर बल अधिक दिया।

एडरसन और करतबुल के अनुसार, ज्ञान के चार आयाम है -

1. तथ्यात्मक ज्ञान
2. वैचारिक ज्ञान
3. प्रक्रियात्मक ज्ञान
4. मेटकागिटिव ज्ञान(Metacognitive) – इसको हम 'ज्ञान का ज्ञान' भी कहते है अर्थात 'ज्ञान की प्राप्ति कैसे की जाए' का ज्ञान ।

गैग्ने और ब्रिग्स के द्वारा शिक्षण एवं निर्देशात्मक उद्देश्यो का वर्गीकरण

इस वर्गीकरण के अनुसार, शिक्षण उद्देश्यों को निम्न श्रेणियों मे विभाजित किया गया है -

1. **बौद्धिक कौशल** (Intellectual Skill)
   यह कौशल किसी समस्या को सुलझाने, सीखने की अवधारणा और नियम सीखने में महत्वपूर्ण सिद्ध होते है।
2. **ज्ञानात्मक रणनीतियां** (Cognitive Strategies)
   इसमें किसी व्यक्ति के स्वयं के शिक्षण, स्मरण शक्ति और विचार कौशल को विकसित करने हेतु विधियों और तकनीको को समावेशित किया जाता है।
3. **मौखिक सूचना** (Oral Information)
   यह किसी व्यक्ति द्वारा प्राप्त किये गये ज्ञान का आयोजन करने के संदर्भ में होता है।
4. **संचालन तंत्र और शारिरीक सूचना** (Motor Skill)
   इसके अन्तर्गत जब मस्तिष्क, तंत्रिका प्रणाली और स्नायु तंत्र एक साथ कार्य करते है। तो उनमें सामंजस्य कैसे स्थापित करना है, आता है।
5. **मनोदृष्टि** (Attitude)
   यह किसी व्यक्ति की आंतरिक या मानसिक स्थिति को व्यक्त करता है।

शिक्षण के महत्वपूर्ण कारक – शिक्षण सूत्र (Maxims of Teaching)

शिक्षण के क्षेत्र में विभिन्न सोधों के आधार पर समय– समय पर पर अनुभवी शिक्षको, मनोवैज्ञानिको तथा शिक्षाशास्त्रियों ने अपने अपने अनुभवो को सूत्र रूप में प्रस्तुत किया है । इन्हीं सूत्र रूप में दिए गए अनुभवो को शिक्षण सूत्र कहा गया । इनका प्रयोग करके शिक्षण अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रभावशाली तथा वैज्ञानिक बन जाती है ।

शिक्षण के सूत्र को निम्न श्रेणियों में विभाजित किया गया है -

1. **सरल से जटिल की और** (Simple to Complex)
   पाठय सामग्री को संगठित करते एवं कक्षा अनुदेश के समय शिक्षक को चाहिए की वह सरल प्रत्यय विद्यार्थी को पहले बताए फिर क्रमानुसार जटिलतम प्रत्ययों को ताकि उनकी रूचि बनी रहे ।
2. **ज्ञात से अज्ञात की और** (Known to Unknown)
   छात्रो को पहले वो बातें बतानी बतानी चाहिए जिनका छात्रों को पूर्व ज्ञान है फिर उसे आधार बनाकर उनका संबध नवीन ज्ञान से करना चाहिए इसलिए शिक्षक पहले पढाते हुए विषय–वस्तु को कक्षा में संक्षिप्त रूप से बता सकता है।
3. **मूर्त से अमूर्त की और** (Concrete to Abstract)
   शिक्षण के प्रारम्भ में छात्रों को पहले, सरल तथा मूर्त पदार्थों के विषय में ज्ञान देना चाहिए। बाद मे उन्हें अमूर्त या सूक्ष्म तथ्यों के विषय में जानकारी देनी चाहिए।

4. **अनिश्चित से निश्चित की ओर** (Indefinite to Definite)
   शिक्षण के प्रारम्भ में छात्रों के विचारों में असंपष्टता होती है। धीरे–धीरे उनमे परिपक्वता आती है शिक्षक का कार्य उनकी संकाओ का निवारण करना होता है।
5. **विशेष से सामान्य की ओर** (Particular to General)
   पहले छात्रों के सामने विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत किये जाये और बाद में उन्हें उदाहरणों के माध्यम से सामान्य सिद्धांत स्थापित किये जाये इसको आगमनात्मक तर्क भी कहा जाता है। **इसको आगमनात्मक तर्क (InductiveReasoning) भी कहते है**
6. **मनोवैज्ञानिक से तार्किक की ओर** (Pstchological to Logical)
   पहले वह पढ़ाया जाये जो छात्रों की योग्यता रूचि के अनुकुल हो तत्पश्चात सामग्री के तार्किक क्रम पर ध्यान दिया जाए।
7. **विश्लेषण से सरलेषण की ओर** (Analysis to Syathesis)
   दोनों एक दूसरे पुरक होते है। ये दोनो ही छात्रों को स्पष्ट एवं निश्चित सुव्यवस्थित ज्ञान देने में सहायक है।
   एक अच्छा शिक्षक पहले छात्रों को किसी विषय वस्तु के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराता है, इसे विश्लेषण कहते है। इसके बाद ज्ञान को व्यवस्थित कर स्थायी करना संश्लेषण कहलाता है।
8. **पूर्ण से अंश की ओर** (Whole to Parts)
   गेस्टाल्ट (Gestalt) या समष्टि मनोवैज्ञानिकों के अनुसार पहले पूर्ण का संज्ञान होता है। बाद में उनके अंशो का पहले हम वृक्ष को देखते है और फिर उनकी तना, शाखाएं, पत्ते, इत्यादि कहने का भाव यह है कि शिक्षण मे पहले विषय वस्तु को पूर्ण रूप से छात्रो के सामने रखा जाए और फिर धीरे–धीरे उनके विभिन्न भागों के विषय मे ज्ञान दिया जाए, तो शिक्षण ज्यादा प्रभावशाली सिद्ध होगा।
9. **प्रकृति का अनुसरण** (Follow the Nature)
   छात्रों को उनकी प्रकृति के अनुसार शिक्षा दी जाए, जहां तक संभव हो शिक्षा प्राकृतिक वातावरण मे हो। यह सिद्धांत भाषाओं की शिक्षा प्रदान करने में और भी अधिक अनुकरणीय हो जाता है।
10. **इंद्रियों का प्रषिक्षण** (Training of Sense)
    मोटेसरी और फ्रोएबेल इस सिद्धांत के मुख्य प्रतिपादक है । हमारी पांच इंदियाँ – आँख, कान, नाक, जिह्वा, और त्वचा – को 'ज्ञान के प्रवेशमार्ग' भी बताया गया है । शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में इनमें से सबका अधिकतम उपयोग करना चाहिए।

शिक्षण के सिद्धांत (Teaching Principles)

शिक्षण विधियां दो प्रकार के सिद्धांतों पर आधारित होती है।

1. **सामान्य सिद्धांत**
2. **मनोवैज्ञानिक सिद्धांत**

सामान्य सिद्धांत (General Principles)

1. प्रेरणा का सिद्धांत (Principle of Motivation) – यह छात्रों के बीच नई बातें जानने की जिज्ञासा पैदा करता है।
2. गतिविधि का सिद्धांत (Principle of Activity)
   - फ्रावेल की किंडरगार्टेन की अवधारणा इसी पर आधारित है।
   - यह शारीरिक और मानसिक दोनो गतिविधियों को सम्मिलित करता है।

3. रूचि का सिद्धांत (Principle of Interest)
शिक्षार्थी के समुदाय बीच वास्तविक रूचि पैदा करके शिक्षण – अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता को बढ़ाया जा सकता है।
4. जीवन के साथ जोड़ने का सिद्धांत (Principle of Linking with Life)
जीवन एक निरंतर अनुभव है और शिक्षण अधिक स्थाई रूप से जीवन के साथ जुड़ा हुआ है।
5. निश्चित उद्देश्य का सिद्धांत (Principle of Definite Aim)
यह सिद्धांत शिक्षण संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग और सीखने पर अधिक ध्यान केंद्रित करने के लिए महत्वपूर्ण है।
6. व्यक्तिगत मतभेदों को पहचानने का सिद्धांत (Principle of Recognising individual Diffrence)
हर छात्र ज्ञान, मनोदृष्टि, योग्यता, क्षमता और सामाजिक–आर्थिक परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में भिन्न होता है। शिक्षण पद्धति को ऐसे तैयार किया जाना चाहिए कि सभी छात्र जीवन मे समान अवसर का लाभ उठा सके।
7. चयन का सिद्धांत (Principle of Selection)
ज्ञान का क्षेत्र दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। शिक्षक शिक्षार्थी को उद्दष्यों के उद्यतन और अधिक प्रासंगिक सामग्री को लेने में सक्षम होना चाहिए ।
8. योजना का सिद्धांत (Principle og Planing)
हर शिक्षक के निश्चित समयबद्ध उद्देश्य होते है। और इसलिए शिक्षण संसाधनों का उपयोग अनुकूलतम बनाने के लिए व्यवस्थित होना चाहिए।
9. विभाजन का सिद्धांत (Principle of Division) – अधिगम को सरल बनाने हेतु विषय को इकाइयों में विभाजित किया जाना चाहिए।
10. संशोधन का सिद्धांत (Principle of Refinement) – शिक्षण को अधिक स्थाई बनाने के लिए अर्पित ज्ञान को तुरंत और बार–बार संशोधित किया जाना चाहिए।
11. सृजन और पुनरसृजन (Principle of Creation & Recreation)
यह सिद्धांत कक्षा के वातावरण को हास्यपूर्ण और रचनात्मक बनाने के लिए अति आवश्यक है।
12. लोकतांत्रिक व्यवहार का सिद्धांत (Principle of Democracy)
यह सिद्धांत छात्रों को विभिन्न गतिविधियों की योजना बनाने और उनके क्रियान्वयन पर बल देता है। यह शिक्षार्थियों के आत्म विश्वास और आत्म–सम्मान को विकसित करने में सहायता करता है।

मनोवैज्ञानिक सिद्धांत (Psychological Principales)

मनोवैज्ञानिक सिद्धांत को निम्नश्रेणियों में विभाजित किया गया है

प्रेरणा और रूचि का सिद्धांत (Principle of Motivation & Intrest)

शिक्षक को यह समझना चाहिए कि हर छात्र का एक अलग मनोवैज्ञानिक सत्व होता है। और एक छात्र को उसकी प्रेरणा और जरूरतों की पहचान करवा कर प्रेरित किया जा सकता है।

मनोरंजन का सिद्धांत (Principle of Intertainment)

मनोरंजन लंबी अवधि तक चलने वाली कक्षाओं की थकान मिटाता है। एकरस्ता को तोड़ता है, यह छात्रों को पुन: सीखने के लिए ऊर्जा प्रदान करता है।

पुनरावृति और अभ्यास का सिद्धांत (Principle of Repetation & Exercise)

यह सिद्धांत विशेष रूप से छोटे बच्चों के संदर्भ में सत्य है।

- **रचनात्मकता और आत्म अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने का सिद्धांत** (Principle of Creativity & Self Expression) यह सिद्धांत विशेष रूप से गणित और भाषाओं को सीखने के विषय में लागू होता है।
- **सहानुभूति और सहयोग का सिद्धांत** (Principle of Sympathy & Cooperation)
  यह सिद्धांत छात्रों को प्रेरित करने के लिए आवश्यक है।
- **प्रबलन का सिद्धांत** (Principle of Reinforcement)
  छात्रों को वांछित व्यवहार के लिए पुरस्कृत किया जाना चाहिए।
- **इंद्रियों को प्रशिक्षण प्रदान करने का सिद्धांत** (Training of Sense)
  शिक्षण में मल्टीमीडिया का उपयोग स्थाई अधिगम के प्रयोजन से किया जाता है।
- **उपचारात्मक शिक्षण का सिद्धांत** (Principle of Remedial Teaching)
  यह सिद्धांत शिक्षक द्वारा अपनी त्रुटियों की पहचान करने और समस्या के उचित समाधान का सुझाव देने संबंधी है।

अधिगम (Learning)

अधिगम को सरल भाषा में सीखना भी कहा जाता है। शिक्षण का मुख्य कार्य अधिगम के क्षेत्र में प्रभावशीलता लाना है। यह दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, उनके उद्देश्य एक दूसरे के पूरक है जब अधिगम प्रभावशाली होगा तभी शिक्षण को भी प्रभावशाली माना जाएगा।

अधिगम मूल रूप से मनोवैज्ञानिक है अधिगम के माध्यम से मनुष्य नए कौशल, ज्ञान, दृष्टिकोण और मूल्यों को अधिग्रहण करता है। अधिगम सीखने की एक प्रक्रिया है। जिसने एक जीव नई चीजें सीखता है और अनुभव के परिणाम स्वरूप उसके व्यवहार में स्थाई परिवर्तन आता है।

1. अधिगम का मुख्य उद्देश्य छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन लाना होता है। यह व्यवहार के हर पक्ष को प्रभावित करता है।
2. अधिगम का अर्थ है ज्ञान प्राप्त करना स्मरण करना तथा अनुभव को संगठित एवं पुरस्कृत करना।
3. अधिगम अर्थ पूर्ण एवं लक्ष्य निर्देशित होता है।
4. अधिगम वातावरण जनित होता है।
5. अधिगम का अर्थ यह भी माना जा सकता है कि समस्याओं का समाधान की प्रक्रिया का विकास करना
6. अधिगम एक क्रियाशील तथा सृजनात्मक पद्धति है यह जीवन चलती रहती है।

व्यक्तिगत और सामाजिक विशेषताओं के आधार पर वर्गीकरण

शास्त्रों के अनुसार जीवन को 4 अवस्थाओं में विभाजित किया गया है – ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। जीवन के प्रथम 25 वर्ष अर्थात ब्रम्हचर्य में व्यक्ति षरीर, मन और बुद्धि के विकास में लगाता है। शिक्षार्थी निर्देशात्मक उद्देश्यों की योजना बनाने में सहायता करते हैं। जो शिक्षण निर्देशात्मक निर्णयों के लिए प्रासंगिक है।

सामाजिक कार्यों को मुख्य रूप से निम्नलिखित में सम्मिलित किया जा सकता है –

1. अवस्था और परिपक्वता के स्तर
2. विषय के प्रति मनोदृष्टि एवं प्रेरणा
3. व्यवसायिक अपेक्षाएं या आकांक्षा
4. विशेष प्रतिभा
5. यांत्रिक निपुणता (Mechenical Dexteaity)
6. विभिन्न पर्यावरण परिस्थितियों में कार्य करने की क्षमता

तालिका 1.8 वयक्क और युवा शिक्षार्थियों में अन्तर

वयस्क शिक्षार्थी	युवा शिक्षार्थी
1. समस्या केंन्द्रित	विशय केंद्रित
2. परिणाम उन्मुख	भविश्य उन्मुख
3. आत्म–निर्देषित	दिषा–निर्देष के लिए वयस्कों पर निर्भर
4. नई जानकारी के बारे में संदेहवादी होना	नई जानकारी को सहजता से स्वीकार करना
5. स्वयं सीखने के लिए उतरदायी	अन्य लोगों पर निर्भर

अधिगम शैली के आधार पर वर्गीकरण

अधिगम शैली के आधार पर शिक्षार्थी जानकारी को प्राप्त एवं संशोधित करना सीखते हैं ।

तालिका 1.4 नव षिक्षार्थियों के अनुभव प्रभावी अधिगम

1. नव षिक्षार्थियों के प्रकार	प्रभावी अधिगम षैली
2. दृष्य संबंधी	चित्र और प्रदर्षन
3. श्रवण संबंधी	षब्द और ध्वनि
4. सहज ज्ञान संबंधी	अन्तदृश्टि और आन्तरिक अनुभूति
5. आगमनात्मक	तथ्यों का अवधारणा विकसित करना
6. निगमनात्मक	अवधारणा से तथ्यों की और जाना
7. सक्रिय	भौतिक गतिविधियां
8. चितंनषील	विचार विमर्ष और आत्मनिर्भर
9. क्रमिक	संबंधित चरणों की श्रृंखला
10. वैष्विक स्तर पर	समग्र –दृश्टिकोण

श्रवण के आधार पर वर्गीकरण

श्रवण एक महत्वपूर्ण कौषल है, और श्रवण शैली चार प्रकार की होती है।

1. **सक्रिय श्रवण** (Active Listening)
   यह श्रवन उद्देश्य पूर्ण होता है।
2. **समानुभूति श्रवण** (Empathetic Listening)
   यह सक्रिय श्रवण का ही एक रूप है जिसमें दूसरे व्यक्ति को समझने का प्रयत्न किया जाता है।
3. **मूल्यांकन और आलोचनात्मक श्रवण** (Evaluative & Critical)
   इसमें श्रोता वक्ता के संदेश की परिशुद्धता सार्थकता और उपयोगिता का मूल्यांकन करता है।
4. **सराहनात्मक श्रवण** (Appreciative)
   इसमें मनोरंजन मानसिक रूप से आराम देने वाली भावनात्मक रूप से उद्दीप्त करने वाली जानकारी को सम्मिलित किया जाता है।

विचार शैली के आधार पर वर्गीकरण

शिक्षार्थियों की अलग–अलग सोच शैली होती है जिनका निम्नलिखित प्रकार से उल्लेख किया गया है ।

- **चिंतनशील विचारक** (Reflective Thinkers)
  1. यह सदैव विषय वस्तु के संबंध में नई जानकारी लेना चाहते हैं।
  2. यह नई जानकारी को अतीत के अनुभवों से संबंधित करने की चेष्टा करते हैं।
  3. सदैव तक जानने का प्रयास करते हैं।
  4. इनमें सीखने के दौरान भावुकता का अंश रहता है।

- **रचनात्मक विचारक** (Creative Thinkers)
  1. नई जानकारी के साथ क्रीडा भाव।
  2. तर्क जानने का प्रयास।
  3. समस्याओं के स्वयं द्वारा विकसित समाधान की चेष्टा।
  4. यह अल्प मार्गी समाधान में भी विश्वास रखते हैं।
- **व्यवहारिक विचारक** (Practical Thinkers)
  1. सदैव तथ्यात्मक जानकारी की तलाश करना।
  2. अपना कार्य करने के लिए सबसे सरल और कारगर उपाय का शोध करना।
  3. वह तब संतुष्ट नहीं होते जब तक अपने नए कौशल का अपने कार्य में उपयोग नहीं कर पाते।
- **वैचारिक विचारक** (Conceptual Thinkers)
  1. उनके मन में पहले से ही एक विचार बना होता है यह नई जानकारी को सहज ही स्वीकार नहीं करते वह सदैव मन में एक बड़ी तस्वीर लेकर चलते हैं।
  2. इस प्रकार के विचारक यह जानना चाहते हैं कि जीवन की प्रक्रियाएं कैसे चलती है न कि केवल इतना की अंतिम परिणाम क्या रहता है।
  3. वह कल्पित वस्तु जो वर्तमान में उस प्रक्रिया का भाग नहीं को भी इससे संबंधित करके सोचते हैं।
- **रचनावादी दृष्टिकोण** (Constructivist Approch)

  रचनावादी दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के पांच अंतर संबंधित अवयव है जिनको 5 -E दृष्टिकोण भी कहते हैं जो निम्नलिखित है।

  1. **सलंग्न** (Engage)
     इसमें शिक्षक का मुख्य कार्य शिक्षार्थियों को सीखने के लिए प्रेरित करना है।
  2. **अन्वेषण** (Explore)
     इसके अंतर्गत सीखने के लिए सभी इंद्रियों का उपयोग सामूहिक भावना एवं कुछ सामान्य अभिज्ञता विकसित होना आदि आते हैं।
  3. **व्याख्या** (Explain)
     इसके अंतर्गत मुख्य रूप से शिक्षक शिक्षार्थी में पारस्परिक विचार–विमर्श व्याख्या आदि आते हैं।
  4. **विस्तार** (Elaborate)
     प्राप्त ज्ञान को कहीं और भी लागू किया जा सकता है।
  5. **मूल्यांकन** (Evaluate)
     प्राप्त ज्ञान का उद्देश्य के अनुसार मूल्यांकन।

शिक्षण को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Teaching)

शिक्षण के आधारभूत आवश्यकताओं के अंतर्गत शिक्षण के सूत्र और उसे प्रभावित करने वाले कारक महत्वपूर्ण है। इसके अलावा इसमें तकनीकी प्रगति से शिक्षण विधियां एवं शिक्षण सामग्री भी उल्लेख किया है। इन सब के सम्मेलन से ही शिक्षण प्रभावी बनता है। शिक्षण एक कला और कौशल है इसका अधिग्रहण कई कारकों पर निर्भर करता है जिनका नीचे संक्षिप्त में वर्णन किया जाता है।

1. **शिक्षण की शैक्षणिक योग्यता** (Educational Qualification)
   सामान्यतया यह माना जाता है कि अत्यधिक योग शिक्षकों को उच्च कक्षाओं को बढ़ाना चाहिए और कम योग्य शिक्षकों को निम्न स्तर की कक्षाओं को पढ़ाना चाहिए इसके लिए सरकार ने अलग–अलग कक्षाओं के लिए योग्यता निर्धारण किया हुआ है जैसे b-Ed नेट आदि ।

2. **शिक्षण कौशल** (Teaching Skill)
प्रभावी शिक्षण के लिए समुचित कौषल संग्रह का होना आवश्यक है। इस शिक्षण कौशल जन्म से ही विद्यमान होता है लेकिन कुछ कौशलों के लिए एक भावी शिक्षक को सचेत प्रयास करने पड़ते हैं।
3. **शिक्षक का अनुभव** (Experience of Teacher)
शिक्षक स्वयं हर समय एक शिक्षार्थी होता है एक अच्छा शिक्षक सदैव अपने ज्ञान छात्रों के साथ साझा करता है और अपने अनुभव से छात्रों के सवालों एवं कक्षा प्रबंधन को श्रेष्ठ ढंग से नियंत्रित करता है।
4. **कक्षा का वातावरण** (Classroom Enviroment)
एक शिक्षक को ही शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को श्रेष्ठ तक बढ़ाने के लिए कक्षा का वातावरण इसके लिए सुगम बनाने में पहल करनी पड़ती है।
5. **आर्थिक कारक** (Economic Factor)
प्रभावी शिक्षण के लिए शिक्षक की स्वतंत्र सोच आवश्यक है, और इसको सुनिश्चित करने के लिए आर्थिक स्वतंत्रता का होना अत्यंत आवश्यक है। यदि शिक्षक का ध्यान आर्थिक समस्याओं की ओर लगा रहा तो उससे शिक्षक की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है। यह शिक्षार्थियों पर समान रूप से लागू होगा।
6. **शक्षण संस्थाओं की प्रशासनिक नीतियां** (Administrative Policies)
जैसा कि हम जानते हैं कि शिक्षक कक्षा को ढंग से संचालित करना चाहते हैं इसलिए वे अपनी सोच में स्वतंत्रता चाहते हैं।
दूसरी तरफ शिक्षण संस्थान प्रशासन अधिकारी चाहे वह विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय के हो शिक्षण पद्धतियों में मानकीकरण सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत रहते हैं। इसलिए दोनों शिक्षक और प्रशासन में अच्छा समन्वय होना चाहिए ताकि शिक्षण उद्देश्य को सुचारू रूप से प्राप्त किया जा सके।
7. **विषय वस्तु** (Subject Matter)
जब कोई शिक्षक ऐसे विषय को पढ़ाता है । जिसमें उसने विशेषज्ञता प्राप्त नहीं की है तो वह अपने शिक्षण से छात्रों को इतना प्रभावित नहीं कर सकता । लेकिन वही शिक्षक अपने विशेषज्ञता प्राप्त विषय को पढ़ाता है तो वह उसे विद्यार्थियों को और अच्छे ढंग से समझा सकता है ।
8. **समाज एवं माता–पिता की अपेक्षाएं**
माता–पिता की अपेक्षाएं हस्तक्षेप के रूप में कार्य करती है वह शिक्षार्थी पर दबाव डाल सकते हैं जिसमें शिक्षण भी प्रभावित हो सकता है ।

शिक्षण कौशल (TeachingTechnique)

शिक्षक अनुसंधान की राष्ट्रीय परिषद और प्रशिक्षण में इसके प्रकाशन के लिए निम्नलिखित शिक्षण कौशलों पर बल दिया गया है –

1. लिखित षिक्षण उददेष्य
2. शिक्षक सामग्री का आयोजन करना
3. पाठ का परिचय सुचारू रूप से देने के लिए व्यवस्था करना
4. पाठ का परिचय देना
5. कक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों को व्यवस्थित करना
6. प्रश्नों का सही वितरण करना
7. प्रतिपुष्टि प्रबंधन
8. व्याख्या करना
9. उदाहरण सहित व्याख्या करना
10. शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग करना
11. कार्य प्रेरक वस्तु या संदीप पल में विभिन्न ताला ना